रात्री शक मत... ओम् शान्ति प्रातः क्लास 1-7-67

बाप बैठ समझाते है। इस शरीर का मालिक है आत्मा। यह पहले-2 समझाना चाहिये। क्योंकि अभी बच्चों
को ज्ञान मिला है। पहले-2 तो समझना है कि हम आत्मा है। इस शरीर का हम मालिक है। शरीर आत्मा का
मालिक नही है। शरीर से आत्मा काम लेती है। पार्ट बजाती है। ऐसे-2 ख्यालात कोई और को आते नही
है क्योंकि वो देहअभिमानी है। यहाँ पर तो यही ख्याल मे निश्चय बिठाया जाता है कि मै आत्मा हूँ
यह मेरा शरीर है। मै परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। यही याद बार-2 भूलजाती है। यह पहले पुरु
याद करना चाहिये। यात्रा पर जब जाते है तो कहते है कि चलते ही रहो। तुमको भी याद की यात्रा पर
चलते ही रहना है। माना याद करना है। याद नही करते है तो गोया कि यात्रा पर ही नही चलते है। देहअभि
आता है। देहअभिमान से कुछ नो कुछ विकर्म हो जाते है। ऐसे भी नही कि मनुष्य सदैव विकर्म करते ही रहते
है। फिर भी कमाई तो बन्द होजाती है नां। इसमे जितना भी हो सके याद की यात्रा मे ढीला नहीपड़ना
चाहिये। एकान्त मे बैठ कर अपने साथ विचारसागर मंथन करके पुआईन्टस निकालनी होती है। कितना
समय हम बाबा की याद मे रहते है। मीठी चीज की याद आती ही रहती है नां। कुमार को कन्या मिलती
है तो वो बहुत मीठी चीज हो जाती है। कितने लव से याद करते है। देह मे लव जाता है। बच्चों को
समझाया है कि सभी मनुष्य मात्र एक दो को नुकसान ही करने वाले है। सिर्फ टीचरो की ही बाबा सराहना
करते है कि उनमे कोई-2 टीचर खराब भी होते है। नही तो टीचर माना मैनर्स सिखाने वाला। जो
रिलिजस माइंडिड अच्छा स्वभाव होता है उनकी फिर चलन भी अच्छी होती है। बाप आकर शराब आदि पीते है
तो बच्चों को भी रंग लग जाता है। इसको ही कहा जाता है खराब शैतानी संग। क्योंकि रावण राज्य है नां।
राम राज्य था जरूर परन्तु वो कैसे था, वो वण्डरफुल बाते मीठे-2 बच्चों तुम्ही जानते हो। स्वीटस्वीट
स्वीटेस्ट कहा जाता है। बाप की याद मे रह कर ही तुम पवित्र बनते हो और बनाते हो। बाप पतित
सृष्टी मे आते है। सृष्टीमे मनुष्य ही रहते है। जलमई कोई सृष्टी थोड़ेई कहेंगे। सृष्टी मे मनुष्य जानवर
खेती बाड़ीआदि सब कुछ होता है। मनुष्य के लिये तो सब कुछ चाहिये नां। शास्त्रों मे प्रलय का वरतान्त
ही रांग है। प्रलय होती ही नही है। यह सृष्टी का चक्र फिरता ही रहता है। बच्चों को आद से लेकर
अन्त तक सारा याद रखना है। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार के चित्र याद आते है। मेला मिलाखड़ा
याद आता है। यो सब है हद के। तुम्हारी है बेहद की याद। बेहद की खुशी बेहद का धन।
बेहद का बाप है नां। हद के बाप से हद का ही मिलता है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता
है। सुख होता ही है धन से। धन तो वहाँ पर अपार है। सब कुछ सतोप्रधान है वहाँ। तुम्हारी बुद्धी
मे है कि हम सतोप्रधान थे फिर बनना है। यह भी तुम अभी ही जानते हो। मनुष्य तो घोर अन्धेरे मे है।
तुम्हारे मे भी नम्बरवार है। स्वीटस्वीटस्वीटेस्ट है नां। इसलिये भी स्वीट होने वाले है। वो ही ऊंच पद
पावेंगे। स्वीटेस्ट तो वो है जो बहुतो का कल्याण करते है। बाप भी स्वीटेस्ट है तब तो सबका कल्याण
करते है। कोई मखी वा चीनी आद कोई स्वीटेस्ट नही कहा जाता है। यह तो मनुष्य की चलन पर कहा
जाता है। कहते है नां यह स्वीट चाइल्ड है। सतयुग मे कोई भी ऐसे शैतानी की बात होती नही।
इतना ऊंच पद जो पाते है तो जरूर इतना ऊंच पुरुषार्थ भी किया होगा नां। तुम अभी नई दुनियाँ
को जानते हो। तुम्हारे लिये तो जैसे कि कल ही नई दुनियाँ सुखधाम होगी। और कलयुगी मनुष्यों के
लिये 40-50 हजार वर्ष तक अभी कलयुग दूर है। उनको पता ही नही है कि शान्ति कब थी। कहते है
कि विश्व मे शान्ति हो। तुम बच्चे जानते हो कि विश्व मे शान्ति थी। जो ही अभी फिर तुम स्थापन
कर रहे हो। अभी यह बाते सबको समझावें कैसे? कहते है नां सेमीनार करें। ऐसी-2 पुआईन्टस निकालनी
चाहिये जिसकी कि बहुत चाहना हो मनुष्यों को। विश्व मे शान्तिः के लिये शोर मचाते रहते है।
क्योंकि अशान्तिः बहुत है। यह लन्दन [illegible] ... तो विश्व मे शान्ति

शान्तिः थी। उनको ही हेवन डीटी वर्ल्ड कहा जाता है। वहाँ पर विश्व मे शान्तिः
5000 वर्ष पहले। यह बाते और कोई नही जानते है। यह है मुख्य बात। सब आत्माये मिल कर
कहते है कि विश्व मे शान्ति स्थापन हो। सभी आत्माये पुकारती है। और तुम बच्चे यहाँ पर पुरुषार्थ कर
रहे हो विश्व मे शान्तिःस्थापन करनी है। बोलो भारत मे शान्तिः थी नाँ। सतयुग मे शान्तिः थी।
और कलयुग मे अशान्तिः है क्यो? क्योकि अनेक राज्य है, माया का राज्य है। भक्ति का भी पाम है।
दिन प्रति दिन वृधी होती ही जातीहै। मनुष्य भी मेले मिलाखाडो पर जाते है तो समझते है नाँ कि
जरूर कुछ पुण्य होगा। अब तुम समझते हो कि इससे कोई पावन बन नही सकते है। पपावन बनने का रास्ता
मनुष्य तो कोई बता नही सकते है। पतित पावन एक है बाप है। दुनियाँ एक ही है सिर्फ उसको ही
नई पुरानी कहा जाता है। नई दुनियाँ मे नया भारत नई दहली कहते है। जरूर है कि नई देहली
तो नये भारत मे ही होगी नाँ। वहाँ पर तो सब कुछ नया है। यह मथुरा वृदाबन आद कोई नेय नही
है, नई होनी है। जिसमे ही फिर नया राज्य होगा।यहा पर तो पुरानी दुनियाँ मे पुराना ही राज्य है।
पुरानी और नई दुनियाँ किनको कहा जाता है यह तुम्ही जानतेहो। मनुष्य तो समझते है कि 40 हजार
वर्षो के बाद नई दुनियाँ होगी। अज्ञान की नीन्द मे है नाँ। अभी तुम बच्चे जानते हो कि भक्ति मार्ग
का कितना परस्ताव है। इनका कहा जाता है अज्ञान। ज्ञान सागर एक बाप है। बाप तुमको ऐसे नही
कहते है कि राम-2 कहो वा ऐसे-2 करो। नही बच्चो को तो समझाया जाता है।वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी
कैसे रिपीट होती है। यही ऐडयुकेशन तुम पा रहे हो। इसका नाम ही है रूहानी ऐडयुकेशन।स्प्रिचुअल नालेज।
उसका अर्थ भी कोई नही जानते है। ज्ञान सागर तो एक ही बाप को कहा जाता है नाँ। वो है स्प्रिचुअल
नालेज फुल फादर। तुम रूहो से बाते करते हो। रूहानी रूह पढाते है। मनुष्य तो जिस्मो से बात करते है।
रूहानी रूह पढाते है। तो बाप तो रूहो से ही बाते करते है। परन्तु वो भी तो कोई शास्त्र मे नही है।
क्योकि गीता मे कृष्ण का नाम डाल दिया है तो मनुष्य कैसे समझें? तुम बच्चे समझते हो कि रूहानी बाप
पढाते है। यह है स्प्रिचुअल नालेज। शास्त्रो मे स्प्रिचुअल नालेज है नही। यह तुमको बाप से ही मिलती है।
रूहानी नालेज को ही स्प्रिचुअल नालेज कहा जाता है।उनके पास जो नालेज है वो कोई मनुष्य पास नही है।
बाबा ही स्प्रिचुअल फादर, सुप्रीम रूह है। तुम बच्चे जानते हो कि आत्मा बिन्दी है। वो हमको पढाते
है। हम आत्माओ को बाप पढा रहे है। तो भुलना नही चाहिये।हम आत्माओ को जो नालेज मिलती है
हम फिर दुसरी आत्माओं को भी देते है। यह नालेज तब बुधी मे ठहरेगी जबकि अपने को आत्मा समझ
बाप ही याद मे रहेंगे। याद मे बुहत बच्चे हट देहअभिमान मे आ जाते है। देहीअभिमानी बनने की
अभी प्रैक्टिस करनी है। हम आत्मा इनको सौदा देती हूँ।हम आत्मा ही व्यापार करते है।अपने को आत्मा
समझ कर बाप को याद करते रहने मे ही फायदा है।आत्मा को ही ज्ञान है कि हम यात्रा पर है।कर्म तो
करना ही है। बच्चो आद को भी सम्भालना ही है। धन्धा आद भी करना है। परन्तु धन्धे मे भी याद रहे
कि मै आत्मा हूँ।आत्मा को ही सौदा दे रही हूँ। यही बडा मुश्किल है। बाप कहते है कि कोई भी उल्टा
काम कब नही करो। कोई पूछते है कि बाबा हमको झूठ बोलना पड़ता है।दो के बदले मे हम चार
ले लेते है।बाबा कहते है कि यह बडापाप ही है।यह तो बहुत छोटी सी बात है।आज कल की तो
दुनियाँ ही झूठी है। सबसे बडा पाप है विकार का। वो ही बडा तंग करता है। कोई खूबसूरत को देखा
तो बस उनकी ही याद आती रहेगी। बाबा के पास ऐसे-2 समाचार लिखते है कि तुम सुनो तो वन्डरलगें।
सेन्टर पर आते है समझने लिये फिर पढाने वाले टीचर ही फिदा हो जाते है। उनको जाकर कहते है कि मैं
से शादी करेगी। उनको गुस्सा लगातो थप्पड मार दिया। वो फिर दुसरे सेन्टर पर जाते है।ऐसे-2 बहुत
सैमपल होते है। एक सेन्टर से मार खाकर फिर दूसरे पर जाते है। ऐसे को तो जो मजबूत माता हो वो

ऐसा थप्पड़ मारें जो लाल हो जावे। भाग जावे। फिर इधर सेन्टर पर जाकर यहाँ भी ऐसही थप्पड़ मार कर भगवाना चाहिये। काम तो देखो कितना ... शैतान है। दुनियाँ में झूठ तो बहुत है नाँ। सबसे बड़ी झूठ बोली है व्यास भगवान ने। मनुष्य ऐसी बाते सुनेंगे तो क्या समझेंगे। ऐसी-2 कहानियाँ बैठ बनाई है। है तो झूठी ही नाँ। भगवान ऊपर इतना झूठ बोले तो मनुष्य कितना झूठ बोलते होंगे। दवापुर से लेकर यह शास्त्र ... होता है। फिर यहाँ पर तुम बच्चों को पावन बनना है। रक्षा बन्धन भी ... पाई पैसे की राखी मिलती थी। ब्राह्मण लोग जाकर राखी बाँधते है। आज कल तो राखी ... भी कोई-2 पैतसी बनाते है। वास्तव में है अभी की बात। तुम बाप से प्रतिज्ञा करते हो कि हम कब विकार में नही जावेंगे। आप से विश्व का मालिक बनने वाली मिलता है। बाप कहते है 63जन्म विषय वेतरणी नदी में गोते खवाये है अब तुमको क्षीरसागर मे ले चलते है। सागर कोई भी है नही। ... में कहा जाता है। तुमको शिवालय मे ले जाते है। वहाँ पर तो अथाह सुख है। अभी यह अन्तिम जन्म मे है आत्माओं पवित्र बनो। क्या बाप का कहना नही मानोगे? ईश्वर तुम्हारा बाप कहते है कि मीठे-2 बच्चों विकार मे नही जाओ। जन्मजन्मान्तर के पाप सिर पर है। वो मुझे याद करने पर ही भस्म होंगें। कल्प पहले भी यह तुमको शिक्षा दी थी। बाप गैरन्टी तभी करते है जबकि तम भी गैरन्टी करते हो। कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगें। इतना याद करते रहो जो कि शरीर ही का भान नही रहे। सन्यासियों में भी कोई तो बहुत तीखे ब्रह्म ज्ञानी होते है। वो भी ऐसे ही बैठे-2 शरीर छोडते है। यहाँ पर तो तुमको बाप श्रृंगारते है। समझाते है कि पावन बन कर जाना है। वो तो अपनी ही मत पर चलते है। ऐसे नही कि वो शरीर छोड कर कोई मुक्ति जीवन मुक्ति मे जाते है नही। आते तो फिर भी यहाँ पर ही है। परन्तु उनके फालोवर्स समझते है कि वो निर्वाण गया। बाप समझाते है कि एक भी वापस नही जा सकता है। कायदा ही नही है। झाड वृद्धी को जरूर पाना है। अभी तुम संगम युग पर बैठे हो। और मनुष्य सभी है कलयुग में। तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। वो है आसुरी सम्प्रदाय में। जो तुम्हारे धर्म के होंगे वो आते जावेंगे। दैवी सम्प्रदायों का भी वहाँ पर सिजरा है नाँ। यही बदली होकर फिर धर्मो मे चले गये है। नही तो वहाँ पर जगह कौन भरेगा। जरूर वो अपनी जगह भरने फिर आ जावेंगे। यह बहुत महीन बाते है कि वो जगह कौन भरेगा। बहुत अच्छे-2 भी आवेंगे जो कि दूसरे धर्म कनवर्ट हो गये होंगें। तो वो फिर अपनी जगह पर आ जावेंगें। जो ऊपर मे जगह मिली हुई है वहाँ पर ही जाना होगा। तुम्हारे पास तो मुसलमान, आद भी आते है नाँ। बडी खबरदारी रखनी होती है झट कहेंगें कि यहाँ पर दूसरे धर्म वाले कैसे आते है। अमरजेन्सी मे तो बहुत को पकडते है। फिर पैसे मिलने पर छोड देते है। रावण राज्य है नाँ। जो कल्प पहले हुआ था वो तुम अभी देख रहे हो। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था जबकि बाप बच्चों को नालेज देते है। उनके लिये है कलयुग। तुम्हारे लिये है पुरुषोतम संगम युग। तुम अभी मनुष्य से देवता उत्तम पुरुष बनते हो। यह है सर्वोत्तम ब्राह्मणों का कुल। इस समय बाप और बच्चे रूहानी सेवा पर है। कोई को बहुत ... धनवान बनाना यही रूहानी सेवा है। कितना कल्याण करना होता है। बाप कल्याण करते है तो बच्चों को भी मदद देनी चाहिये। जो बहुतों को रास्ता बताते है वो बहुत ऊँच पद पाते है। पुरुषार्थ तो जोर से करवाया जाता है फिर जो फल निकलता है वो कहा जाता है कि ड्रामा प्लान अनुसार। कल्प पहले मिसल ही है। रेस्पानसीबुल्टी बाप के ऊपर है। बच्चों को कहते है कि फिक्र मत करो। नही सुनते है तो क्या करोगें। सभी बन्दरों को थोडे ही ... पीना सिखाया जाता है। उनमे भी अलग ही क्वालिटी होती है जिनको सिखाते है। यहाँ पर भी ऐसे ही है इस कुल का नही होगा तो भल कितना भी माथा मारो कोई कम तुम्हारा माथा खावेंगें कोई जरूरती। बाबा ने कहा है जब दुःख बहुत आता जावेगा तो फिर भी आवेंगें। तुम्हारा कुछ नही ... [illegible]